

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर

कक्षा : ग्यारहवीं - जैन सिद्धान्त रत्नाकर (परीक्षा 21 जुलाई, 2019)

समय : 3 घण्टे

अंक : 100

रोल नं.: (अंकों में)

(शब्दों में)

परीक्षा केन्द्र की कोड संख्या :

केन्द्राधीक्षक/निरीक्षक के हस्ताक्षर

परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक निर्देश-

सावधान

1. परीक्षा में नकल नहीं करें। 2. प्रामाणिकता से परीक्षा देकर ईमानदारी का परिचय दे।
3. मायावी नहीं मेधावी बनें। 4. नकल से नहीं अकल से काम लें।

1. सभी प्रश्नों के उत्तर इसी पत्रक में प्रश्न के नीचे/सामने छोड़े गये रिक्त स्थान में ही लिखें।
2. काली अथवा नीली स्याही का प्रयोग करें, लाल स्याही का नहीं।
3. उत्तीर्ण होने के लिए कम से कम 50 प्रतिशत अंक पाना अनिवार्य है अन्यथा अनुत्तीर्ण माना जाएगा।
4. अधीक्षक, पर्यवेक्षक एवं वीक्षक के निर्देशों का पालन करें।
5. कहीं पर भी अपना नाम अथवा केन्द्र का नाम नहीं लिखें।

जाँचकर्ता के प्रयोग हेतु-

प्रश्न क्र.	1	2	3	4	5	6	कुल योग
प्राप्तांक							
पूर्णांक	10	10	10	10	24	36	100
पुनः जाँच							

जाँचकर्ता के हस्ताक्षर

प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए :-

10x1=(10)

- (a) सम्यक्त्व पराक्रम का अंतिम फल है-
(क) संयम की प्राप्ति (ख) केवल ज्ञान
(ग) वैराग्य (घ) मोक्ष प्राप्ति ()
- (b) 'अणुप्पेहा शब्द का अर्थ है-
(क) अणुव्रत (ख) अनुशासन
(ग) अनुप्रेक्षा (घ) अनुपेठा ()
- (c) वन्दना से जीव किस गुण को प्राप्त करता है-
(क) नीच गोत्र कर्म का क्षय (ख) उच्च गोत्र कर्म का बंध
(ग) अप्रतिहत सौभाग्य (घ) उपर्युक्त सभी ()
- (d) ज्ञानावरणीय कर्म का क्षय होता है-
(क) काल प्रतिलेखना से (ख) स्वाध्याय करने से
(ग) दोनों से (घ) इनमें से कोई नहीं ()
- (e) तप से जीव को किस गुण की प्राप्ति होती है-
(क) वोदाण (ख) मोक्ष
(ग) ज्ञान (घ) धन ()
- (f) आश्रव है-
(क) योग (ख) उपयोग
(ग) ज्ञान (घ) दान ()
- (g) जीव भावाधिकरण के भेद होते हैं-
(क) 108 (ख) 39
(ग) 42 (घ) 25 ()
- (h) मैत्री भावना का विषय है-
(क) गुणीजन (ख) प्राणिमात्र
(ग) दुःखीजन (घ) अयोग्य पात्र ()
- (i) सूक्ष्म सम्पराय गुणस्थान में प्रकृतियों का बंध होता है-
(क) 10 (ख) 20
(ग) 17 (घ) 22 ()
- (j) सातावेदनीय कर्म का बंध किस गुणस्थान तक होता है-
(क) छठे (ख) दसवें
(ग) बारहवें (घ) तेरहवें ()

- प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में दीजिए :-** **10x1=(10)**
- (a) असातावेदनीय कर्म का बंध छठे गुणस्थान तक होता है। ()
- (b) देवायु का बंध चौथे गुणस्थान तक होता है। ()
- (c) "मित्रानुराग" संलेखना व्रत का अतिचार है। ()
- (d) शीलरहितता एवं व्रत रहितता चारों आयुओं के बंध हेतु हैं। ()
- (e) 'बीसपंथी' दिगम्बर सम्प्रदाय का एक भाग है। ()
- (f) "स्त्रीणां न तद्भवे मोक्षः" यह कथन श्वेताम्बर मत का है। ()
- (g) निंदना से जीव संवेग को प्राप्त करता है। ()
- (h) चतुर्विंशति स्तव से जीव के दर्शन-विशुद्धि की प्राप्ति होती है। ()
- (i) वैयावृत्य से जीव विनय गुण को प्राप्त करता है। ()
- (j) क्षान्ति से जीव परीषहों को जीतता है। ()
- प्र.3 निम्नलिखित में क्रम से सही जोड़ी मिलाकर उत्तर रिक्तस्थान में लिखिए:-** **10x1=(10)**
- (a) बंध योग प्रकृतियाँ (क) सत्यव्रत
- (b) लक्ष्मी (ख) संतोष
- (c) सुविहित परम्परा (ग) अनाश्रवपन
- (d) एकान्त अवेदी में गुणस्थान (घ) भाव विशुद्धि
- (e) अनुवीचि भाषण (च) शैलेशी भाव
- (f) आत्म प्रशंसा (छ) आगम मर्यादानुसार
- (g) लोभ विजय (ज) लक्ष्मी
- (h) चारित्र सम्पन्नता (झ) 120
- (i) भाव सत्य (य) 5
- (j) संयम (र) नीच गोत्र
- प्र.4 मुझे पहचानो :-** **10x1=(10)**
- (a) मेरी आराधना से जीव अज्ञान का क्षय करता है।
- (b) मेरा प्रत्याख्यान करने से जीव वीतराग भाव को प्राप्त करता है।
- (c) मुझ पर विजय प्राप्त करने पर जीव सरलता को प्राप्त करता है।
- (d) मेरी प्रतिलेखना से जीव ज्ञानावरणीय कर्म का क्षय करता है।
- (e) मैं पाँचों व्रतों में प्रधान व्रत हूँ।
- (f) मैं तिर्यचायु बंध का प्रमुख कारण हूँ।
- (g) मैं एक वेद हूँ, मेरा बंध दूसरे गुणस्थान तक होता है।

(h) मेरा बंध सम्यक्त्व सापेक्ष है तथा चौथे से आठवें गुणस्थान तक होता है।

(i) मैं तीर्थकर की अर्थ रूप देशना को सूत्र रूप में गूँथता हूँ।

(j) मैं एक कारक हूँ, मुझमें तृतीय विभक्ति होती है।

प्र.5 निम्न प्रश्नों के उत्तर एक-दो पंक्तियों में दीजिए:- 12x2=(24)

(a) उपधि प्रत्याख्यान से जीव क्या प्राप्त करता है ?

.....
.....
.....

(b) जीव व्यंजन लब्धि कैसे प्राप्त करता है ?

.....
.....
.....

(c) योग प्रत्याख्यान से जीव किस गुण को प्राप्त करता है ?

.....
.....
.....

(d) “एगग्ग-मण-संनिवेशणयाए णं चित्त-निरोहं करेइ” इस वाक्य का हिन्दी अनुवाद कीजिए।

.....
.....
.....

(e) “संजमेणं अण्हयत्तं जणयइ” का अर्थ लिखिए।

.....
.....
.....

(f) प्रतिक्रमण से जीव किस गुण की प्राप्ति करता है ?

.....
.....
.....

(g) सामायिक से जीव किस गुण की प्राप्ति करता है ?

.....
.....
.....

(h) ईर्यापथ आश्रव किसे कहते हैं ?

.....
.....
.....

(i) पहले गुणस्थान में बन्ध योग्य प्रकृतियों में किन-किन प्रकृतियों का बंध नहीं होता है ?

.....
.....
.....

(j) अबंध किसे कहते हैं ?

.....
.....
.....

(k) उदीरणा किसे कहते हैं ?

.....
.....
.....

(l) स्थानकवासी किसे कहते हैं ?

.....
.....
.....

प्र.6 निम्न प्रश्नों के उत्तर तीन-चार पंक्तियों में लिखिए :-

12x3=(36)

(a) हिन्दी में अनुवाद कीजिए-

आलोचनाए णं माया-नियान मिच्छादंसण सल्लाणं मोक्खमग्ग-विग्घाणं अणंत संसार वद्धणाणं उद्धरणं करेइ । उज्जुभावं च जणयइ । उज्जुभाव-पडिवन्ने य णं जीवे अमाई इत्थीवेय-नपुंसगवेयं च न बंधइ ।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

(b) हिन्दी में अनुवाद कीजिए-

सहाय-पच्चक्खाणेणं एगीभावं जणयइ । एगीभावभूए वि य णं जीवे एगग्गं भावमाणे अप्पसद्दे अप्पझंझे अप्पकलहे अप्पकसाए अप्पतुमंतुमे संजमबहुले संवरबहुले समाहिए यावि भवइ ।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

(c) हिन्दी में अनुवाद कीजिए-

दंसण-संपन्नयाए णं भव मिच्छत्तं छेयणं करेइ । परं न विज्झायइ । परं अविज्झाएमाणे अणुत्तरेणं नाण-दंसणेणं अप्पाणं संजोएमाणे सम्मं भावेमाणे विहरइ ।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

(d) "जगत्काय स्वभावौ च संवेग वैराग्यार्थम्" इस सूत्र का आशय स्पष्ट कीजिए।

.....
.....
.....
.....
.....
.....

(e) निम्नलिखित शब्दों का अर्थ स्पष्ट कीजिए-

आवश्यकपरिहाणि

दर्शन विशुद्धि

साधु-समाधि

(f) अकाम निर्जरा एवं बालतप में अन्तर स्पष्ट कीजिए।

.....
.....
.....
.....
.....
.....

(g) उदीरणा के लिए कौनसी तीन बातें होनी अनिवार्य हैं ?

.....
.....
.....
.....
.....
.....

(h) सत्ता किसे कहते हैं ? इसके दो भेदों को समझाइए।

.....
.....
.....

.....
.....
.....
(i) स्थानकवासी परम्परा की कोई चार मौलिक मान्यताओं का उल्लेख कीजिए।

.....
.....
.....
(j) दिगम्बर परम्परा की उन तीन मान्यताओं का उल्लेख कीजिए जो श्वेताम्बर परम्परा से भिन्न हैं।

.....
.....
.....
(k) निम्नलिखित वाक्यों का प्राकृत में अनुवाद कीजिए-

1. मैं बालक को फल देता हूँ।

2. राजा शत्रु पर क्रोध करता है।

3. वीतराग को नमस्कार हो।

.....
.....
.....
(l) निम्न वाक्यों का हिन्दी में अनुवाद कीजिए-

1. समाहिणा सुहं लहीअ।

2. बाला समणाय भोयणं दाहिइ।

3. मुणी समाहिं रमीअ।

